भगवान महावीर 2550वां निर्वाण कल्याणक

भगवान महावीर जैन धर्म परंपरा के अंतर्गत इस युग के चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर थे। राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला की संतान भगवान महावीर को बाल्यकाल में वर्धमान नाम दिया गया। उनका जन्म 599 ईसा पूर्व चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को बिहार राज्य के कुंडग्राम, वैशाली (वज्जि संघ) के एक समृद्ध परिवार में हुआ।

भगवान महावीर को उनके विशेष गुणों के कारण पाँच नामों से सम्बोधित किया जाता था- वर्धमान, वीर, अतिवीर, महावीर और सन्मति। बचपन से ही उनकी मनोवृत्ति त्याग और तपस्या की थी। अपनी युवावस्था में मात्र 30 वर्ष की आयु में उन्होंने राजसी जीवन का त्याग कर दिया और घर छोड़कर चले गए। उन्होंने अपने राजसी वस्त्र 'खंडवन' नामक स्थान पर एक 'अशोक वृक्ष' के नीचे छोड़ दिए और दिगंबर संत बन गए।

एक समर्पित श्रमण के रूप में 12 वर्ष तक कठोर तपस्या करने के बाद महावीर स्वामी को 42 वर्ष की आयु में जृम्भिकग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के किनारे, एक साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ। ज्ञान प्राप्त होने के बाद, भगवान महावीर ने अपना पहला उपदेश राजगृह के निकट विपुलाचल में दिया। यहाँ उन्होंने अपने उपदेश जनभाषा अर्थात प्राकृत भाषा में दिए, जिससे एक सामाजिक क्रांति की शुरुआत हुई। महावीर स्वामी के 11 गणधरों में सर्वप्रमुख इंद्रभूति गौतम ने अथक प्रचारक के रूप में कार्य करते हुए .उनके संदेशों का चारों दिशाओं में प्रचार-प्रसार किया।

भगवान् महावीर का व्यक्तित्व ऐसा था कि वे निषेधों के प्रतीक नहीं थे, बल्कि वे सभी को अपनाते हुए स्वीकृतियों के प्रकाश पुंज स्वरूप थे। उन्होंने लोगों को वास्तविक सत्य जानने और इसे जीवन के सभी आयामों में स्वतंत्र रूप से प्रकट होने देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से नहीं बल्कि कर्मों से जाना जाता है। भगवान महावीर ने किसी भी वस्तु के स्वभाव को धर्म बताते हुए उसे क्षमा, संतोष, सरलता और मृदुल भाव से अपनाने पर बल दिया। उनका मानना था कि सच्चा धर्म एक देदीप्यमान दीपक की तरह है, जो जीवन रूपी मार्ग के हर अंधकार को दूर कर सकता है।

. भगवान महावीर ने 2550 वर्ष पूर्व यह घोषणा की थी कि धर्म मानव जाति के बीच फूट पैदा नहीं करता, बल्कि यह एक ऐसी नैतिक/दार्शनिक व्यवस्था है, जो न केवल मनुष्यों के बीच, बल्कि समस्त प्राणिजगत के बीच दया एवं करुणा के सेतु का निर्माण कर उन्हें परस्पर निकट लाता है। इस प्रकार, उन्होंने हिंसा के स्थान पर अहिंसा, असत्य के स्थान पर सत्य को अपनाने का आह्वान किया। भगवान महावीर ने अनेकांत और स्याद्वाद के माध्यम से विविध दृष्टिकोणों का सम्मान करने, अन्याय को समाप्त करने और न्याय के मार्ग को सुदृढ़ करने का उपदेश दिया।

उन्होंने "जियो और जीने दो" का सिद्धांत दिया। उनके अनुसार, केवल जिजीविषा से भरा व्यक्ति ही अपनी सकारात्मक जीवन शैली के माध्यम से अपने पास-पड़ोस, नगर-ग्राम और देश-दुनिया के लिए सह-अस्तित्व के निमित्त रचनात्मक परिस्थितियों का निर्माण कर सकता है। भगवान महावीर की जीवन की अवधारणा इस तथ्य की सूचक थी कि जीवन जीना एक कला है, जोकि आत्म-अनुशासन और आत्म की खोज में निहित है। जीवन जीने संबंधी उनकी अवधारणा में सह-अस्तित्व की नई संभावनाएँ समाहित हैं।

तीर्थंकर महावीर ने भगवान ऋषभदेव से मिली श्रमण परंपरा की विरासत को आगे बढ़ाया। उनका पूरा जीवन सत्य की खोज और समानता के प्रति समर्पित था; उन्होंने ज्ञान और चरित्र के सम्यक्त्व पर भी बल दिया। उन्होंने अपनी आत्मा की पवित्रता के मूलभाव का अनुभव करने के लिए ध्यान योग संबंधी अनेक प्रयोग किए। भगवान महावीर प्रयोगशील व्यक्ति थे और सत्य रूपी धर्म का पालन करते थे। उन्होंने पुद्गल और जीव; चेतन और अचेतन को अलग-अलग करने की साधना की भी व्याख्या की।

समानता के सिद्धांत पर बल देते हुए, भगवान महावीर ने समाज में व्याप्त ऊंच-नीच के भेद-भाव के बंधन को तोड़ा। उनका यह मानना था कि सभी जीवात्माएं, बिना किसी भेद-भाव के मूल रूप से समान हैं। कोई श्रेष्ठ या निम्न नहीं है, न ही कोई स्वामी या दास है और पुरुषों एवं महिलाओं के बीच भी कोई अंतर नहीं है। स्त्री और पुरुष दोनों ही समान सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा के पात्र हैं। उन्होंने महिलाओं को पारंपरिक रीति-रिवाजों तक सीमित रखने वाली बेड़ियों को तोड़कर एक युगपरिवर्तनकारी कदम उठाया और महिलाओं की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। ब्रह्मचर्य का उपदेश देते हुए, उन्होंने इसे एक ऐसे सिद्धांत के रूप में प्रतिपादित किया जो महिलाओं का सशक्तीकरण करता है, न कि उन्हें बंधन में बांधता है। उनके उपदेशों का उद्देश्य भेदभाव को समाप्त कर समाज में समानता की सच्ची भावना का संचार करना था।

भगवान महावीर ने अहिंसा के दृष्टि-दर्शन को नए रूप में परिभाषित किया और कहा कि यह आवश्यक है कि हम किसी का भी मन, वचन और कर्म से अहित न करें। उन्होंने हर प्रकार की हिंसा का निषेध करने का आह्वान किया और अहिंसा को परम धर्म तथा सुख-शान्ति देने वाला बताया। इसे प्राप्त करने के लिए उन्होंने सत्य, चोरी न करने और अपरिग्रह के साथ-साथ ब्रह्मचर्य का पालन करने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया। इसके अलावा उन्होंने हर प्राणी के प्रति दया की भावना रखने और अपनी आत्मा से आनंद की परम अनुभूति प्राप्त करने पर बल दिया। स्वयं पर विजय प्राप्त करने का आह्वान करते हुए उन्होंने 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत पर बल दिया। उन्होंने सत्य के बहुआयामी अस्तित्व का प्रतिपादन किया तथा संघर्षों के अहिंसा आधारित समाधान के लिए अनेकांत के सिद्धांत का प्रवर्तन किया और स्याद्वाद के जरिए इसे जन-जन तक पहुंचाने का मार्ग भी बताया।

भगवान महावीर का मानना था कि आत्मा को बंधन से मुक्त करने के लिए क्रोध पर विजय पाना और सत्य को उजागर करने वाले तथा अशांत मन को शांत करने वाले ज्ञान को धारण करना आवश्यक है। उनके उपदेश, जिन्हें सर्वोदय तीर्थ के नाम से जाना जाता है, क्षेत्र, समय, जाति या सामाजिक दर्जे के बंधन से परे हैं। इस प्रकार, धर्म की उनकी अवधारणा आत्मा की शुद्धता प्राप्त करने पर केंद्रित थी। उन्होंने सभी आत्माओं की अंतर्निहित समानता के सूत्र को पहचाना और उनके प्रति समान रूप से करुणा दिखाई। उनके संदेश का मूल सिद्धांत था कि दूसरों के प्रति उसी दयाभाव और सम्मान के साथ व्यवहार करें, जो आप स्वयं के प्रति चाहते हैं।

2549 वर्ष पूर्व, 72 वर्ष की आयु में भगवान महावीर ने पावापुरी (बिहार) में कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को निर्वाण प्राप्त किया। यह उनके जीवन अर्थात् एक श्रद्धेय शिक्षक से एक सिद्ध अथार्त् महान, मुक्त आत्मा तक की यात्रा का चरमोत्कर्ष था। जैन धर्म के लोग इस शुभ रात्रि को दीपावली के रूप में मनाते हैं। वे भगवान महावीर द्वारा प्राप्त परम प्रकाश और मुक्ति के प्रतीक के रूप में दीप प्रज्वलित करते हैं। जैन पंचांग के अंतिम दिवस को मनाया जाने वाला दीपावली का यह पर्व, उनकी समृद्ध विरासत का एक उज्ज्वल प्रमाण है।

डाक विभाग, भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, समानता और सत्य के मार्ग के प्रति सम्मान भाव व्यक्त करता है और उनके 2550वें निर्वाण कल्याणक पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक-टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : श्री ब्रह्म प्रकाश

विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित।

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of Release	: :	21.04.2024 21.04.2024
मूल्यवर्ग Denomination	: :	**500 पैसे** 500 p
मुद्रितडाक–टिकटें Stamps Printed	: :	201600 201600
मुद्रणप्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकटें, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध मे सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps,First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

Bhagwan Mahaveer 2550th Nirvan Kalyanak

Bhagwan Mahaveer was the twenty-fourth and last Tirthankar of the Jain religion of this era.

Bhagwan Mahaveer, born as Vardhaman, was the son of King Siddhartha and Queen Trishala. He was born on the thirteenth day of the rising moon of Chaitra month, 599 B.C. in the rich environment of vaishali (Vajji Sangha) at Kundgram in Bihar, India.

Due to his special qualities, he was addressed by five names - Vardhaman, Veer, Ativeer, Mahaveer and Sanmati. He has been deeply interested in renunciation since his childhood. He renounced his royal life and left his home at the young age of 30. He left behind his royal clothing under a “Ashoka tree”, at a place called 'Khandvan' and became a Digambara saint.

Bhagwan Mahaveer attained Kaivalya (enlightenment) at the age of 42, under a Sal tree, on the banks of the Rijupalika River near Jurmbhikgram after performing a rigorous penance for 12 years as a dedicated shraman. After attaining enlightenment, Bhagwan Mahaveer chose Vipulachala, near Rajagriha, for his first sermon. Here, he spoke in Prakrit, the people's language, sparking a social revolution. Indrabhuti Gautam, foremost among his 11 Gandharas, became a tireless propagator, spreading his message far and wide.

Bhagwan Mahaveer didn’t represent a personality of prohibitions, rather he became a bright bundle of positive acceptances. He inspired the people to know the real truth and let it manifest freely in all dimensions of life. He said that man is known not by his/ her birth but by the deeds. Describing the nature of an object as religion, Bhagwan Mahaveer emphasized on its adoption through forgiveness, contentment, simplicity and softness. True religion, he believed, was like a radiant lamp, which can dispel all darkness from its path.

2550 Years ago, Bhagwan Mahaveer declared that religion is not such an existence which creates a rift among human beings. Rather, it is such a moral/philosophical system, which creates a bridge of compassion not only between humans, but also among the entire living worlds and brings them closer to each other. Thus, he championed non-violence over violence, truth over falsehood. Through Anekant and Syadvad, he advocated respecting diverse viewpoints, dismantling injustice and solidifying the path to justice.

He evolved the doctrine “Live and let live”. According to him, only the one, who wants to live, can create constructive conditions of coexistence for his/her neighbourhood, city-locality and country-world through a positive living. Mahaveer’s concept of Living was indicative of the fact that living is an art, and it lies in self-discipline and self-discovery. His concept of living contains new possibilities of co-existence.

Tirthankar Mahaveer expanded the inheritance of the Shramana tradition, which came from the Lord Rishabhdev. Mahaveer's entire life was dedicated to the search for truth and equity; Samyaktva of knowledge and also of the character. He performed intense experiments of meditation to experience the essence of the purity of his soul. He was a man of experiment and practised the religion of truth. He explained the practice of separating Pudgal and Jiva; conscious and unconscious.

Championing equality, Bhagwan Mahaveer shattered societal hierarchies. He declared that all souls, regardless of position, are inherently equal. There are no superiors or inferiors, no masters or slaves and no distinction between men and women. Both genders deserve the same social and cultural standing. He took a revolutionary step by dismantling the shackles that confined women within traditional customs, paving the way for their liberation. While advocating for celibacy, he emphasized it as a principle that could empower women, not restrict them. Ultimately, his teachings aimed to dismantle discrimination and awaken a sense of true equality within society.

Bhagwan Mahaveer gave a new expansion to the philosophy of non-violence and said that it is necessary not to harm anyone through thought, word and deed and prohibited every type of violence. Non-violence was described as the supreme religion and the giver of happiness and peace. To attain this, he underlined the necessity of following celibacy along with truth, non-stealing and non- attachment. Apart from this, he emphasized on having a feeling of compassion towards every living being and attaining the ultimate feeling of happiness from one's soul. Calling for victory over oneself, he asserted the principle of live and let live. He propounded the multi-dimensional existence of truth and introduced the principle of Anekant for non-violent resolution of conflicts and suggested the technique of its revelation to the public with Syadvad.

Bhagwan Mahaveer believed that freeing the soul from bondage required conquering anger and embracing knowledge that illuminates truth and calms the restless mind. His teachings, known as Sarvodaya Tirtha, transcended all boundaries – region, time, caste or social status. Ultimately, his concept of religion focused on achieving soul purity. He viewed all souls with compassion, recognizing their inherent equality. This principle formed the core of his message: “treat others with the same kindness and respect you desire for yourself”.

2549 years ago, at the age of 72, Bhagwan Mahaveer attained Nirvana on Kartik Krishna Chaturdashi in Pawapuri (Bihar). This marked the culmination of his life's journey, a transition from a revered teacher to a Siddha – a perfect, liberated soul. Jains celebrate this auspicious night as Diwali, lighting lamps to symbolize the illumination and liberation he achieved. Diwali, the last day of the Jain calendar, becomes a radiant testament to his enduring legacy.

Department of Posts is proud to release a Commemorative Postage Stamp on the 2550th Nirvan Kalyanak of Bhagwan Mahaveer, honoring his lasting legacy of non-violence, equality, and truth.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure	: Sh. Brahm Prakash
Cancellation Cachet	: Smt. Nenu Gupta
Text	: Referenced from content provided by Proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण कल्याणक
Bhagwan Mahaveer 2550th Nirvan Kalyanak



विवरणिका BROCHURE